प्रातःक्लास 23-2-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। पढ़ाते हैं, योग सिखलाते हैं। योग कोई बड़ी बात नहीं है। जैसे बच्चे पढ़ते हैं, योग तो जरूर टीचर से लगता ही है ना। बड़ी बात नहीं। योग तो रहता ही है हमको फलाना टीचर पढ़ाते हैं। आप समान बनाते हैं। एमआबजेक्ट तो रहती ही है। समझते हैं हम फलाना दर्जा पढ़ रहे हैं। इस में टीचर को कहना नहीं है कि मेरे साथ योग लगाओ। आटोमेटकली पढ़ाने वाले साथ योग रहता ही है। सारा दिन तो नहीं पढ़ाते हैं। वह तो जन्म-जन्मान्तर पढ़ते आये हैं। प्रैक्टीस हो जाती है? यहां तो तुम्हारी यह प्रैक्टीस बिलकुल नई है। देहधारी टीचर नहीं है। यह तो है बिदेही। बिदेही टीचर हर 5000 वर्ष बाद मिलता है। खुद ही कहते हैं मैं देह-धारी टीचर नहीं हूं। इसलिए डिफीकल्टी से याद ठहरती है। अपने को आत्मा समझना पड़े। परमपिता परमात्मा टीचर हमको पढ़ा रहे हैं। यह प्रैक्टीस करनी है। याद तो जरूर करना है। जब तक इम्तहान पास हो। याद करते2 इम्तहान पास हो गया फिर चले जायेंगे घर। इम्तहान पूरा होने से ड्रामा ही फिनिश हो जाता है। फिर तुम बच्चों को मालूम है हमारी आत्मा में पार्ट भरा हुआ है जो हमको बजाना है। 84 जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। यह भी अभी मालूम है। पीछे वहां यह पता नहीं रहेगा। यहां सब नालेज तुम बच्चों को मिलती है। टीचर ही बैठ सारी नालेज बच्चों को समझाते हैं। जो समझते रहना है और याद भी जरूर करना है। बड़ी2 बाप कहते हैं मनमनाभव। मनमनाभव का अर्थ भी तो है ना। बच्चे समझते हैं अक्षर राईट है। बाप खुद भी कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। इसमें टाईम लगता है ना। अपनी जांच करनी होती है। जैसे पढ़ाई में और सबजेक्ट्स होते हैं ना। हिस्ट्री, हिसाब, किताब, सांयस आदि। स्टुडन्ट समझते हैं हम कहां तक पास होंगे। तुम बच्चों की बुधि में भी है हम इतने मार्कस से पास होंगे। अपनको देखना है हम बाप को भूल तो नहीं जाते हैं। बहुत लिखते हैं बाबा माया बहुत बड़ी2 भूला देती है। बहुत माया के तूफान, विकल्प आते हैं। न समझने कारण लिखते हैं बाबा इसमें पाप तो नहीं लगता है। ऐसे2 संकल्प-विकल्प आते हैं। देखने से ख़याल आता है, यह करें, इसमें पाप तो नहीं होगा। बाप कहते हैं नहीं। पाप तब होगा जब कर्म-इन्द्रियों से कर बैठेंगे। बाप बार2 समझाते रहते हैं बच्चों को ज्ञान तो है। यह भी जानते हैं सृष्टि का चक्र तो फिरना ही है। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं विष्णु और कृष्ण को स्वदर्शनचक्र क्यों दिया है। दिखाते हैं अकासुर-बकासुर को मारा। अब मारने-करने की तो कोई बात ही नहीं। यह तो अपने पाप कटने की बात है। शिव बाबा को भी कहेंगे नास्वदर्शनचक्रधारी। उनको सारी चक्र का ज्ञान है। आत्मा को अपने बाप से ज्ञान हुआ है। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। स्वदर्शनचक्र धारण कर अपने पापों को भस्म करना है। ज्ञान को धारण कर और अपने 84 जन्मों के चक्र को याद करना है। बाप को याद करनेसे ही पापों का नाश होता है। हरेक को अपनी मेहनत करनी है। ऐसे नहीं कि बाप बैठ दृष्टि देंगे कि इनके पाप कट जायें। बाप यह धंधा बैठ नहीं करते। बच्चों को तो सब को देखेंगे ही। देखने से वा ज्ञान देने से कोई विकर्म नहीं विनाश होंगे। बाप तो रास्ता बताते हैं ऐसे2 करो तो विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत देते हैं। अच्छा समझो बाप आते हैं आत्मा को समझ देखते हैं ऐसे नहीं कि इससे हमारे पाप कट जायेंगे। नहीं। पाप कटेंगे ही अपनी मेहनत से। ऐसे बाप बैठ करे फिर तो यह एक धंधा हो जाये। बाप समझाते हैं ऐसे ऐसे तुम अपने बाप को याद करो। बाप है ही श्रीमत देने वाला। मेहनत अपनी करनी है। कई समझते हैं फलाने साधु, सन्यासी की दृष्टि ही बस है। कृपा वा आर्शीबाद लेते2 गिरते ही आते हैं। यह क्या करेंगे। वह तो अपने ब्रहम तत्व को ही याद करेंगे। बाप तो साफ रास्ता बताते हैं ऐसे2 करो। गाते भी हैं नंगे आये थे नंगे जाना है। यह गायन भी इस समय का है। बाप के वरसन्स फिर भक्ति मार्ग में काम आते हैं। अभी बाप कहते हैं याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो जितना याद करेंगे, बाप तो श्रीमत देते हैं। यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है। इनको ही मदद कहो। ड्रामा अनुसार श्रीमत गाई हुई है। बाप को मत देनी ही

है: कहते हैं अपनको आत्मा समझो। ऐसे नहीं मदद दे कर्मातीत अवस्था को ले जायेंगे। नहीं। टाईम लगता है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अपनको आत्मा समझो बाप को याद करना इसमें बहुत बड़ी अभ्यास चाहिए। वास्तव में माताओं को फुर्सत बहुत रहती है: खाना पकाया, खिलाया यह भागे। कोई धंधा आदि है नहीं। पुरुषों को धंधे का फुर्सा रहता है। अभी तो एक बाप को ही याद करना है। शिव बाबा को याद करते2 लाटरी लेनी है। यह है याद की यात्रा। ताकि सारी जंक निकल जाये। फेल होता है फलाना याद में रहते हैं। चार्ट रखते हैं, पुरुषार्थी हैं। जैसे भक्ति मार्ग में दो तीन घंटा भी बैठ जाते हैं, बहुत भक्त होते हैं। वानप्रस्ती गुरु आदि भी करते हैं। परन्तु उनको भी इतना याद नहीं करते जितना याद देवताओं को करते हैं। वास्तव में देवताओं को याद करना नहीं होता है। न देवतायें कुछ सिखलाते हैं, तुम बच्चों के लिए नई बात नहीं है। और लाखों वर्ष भी कोई बात नहीं। बाप आते ही तब हैं जब स्थापना और विनाश होता है। बच्चे जानते हैं यह विनाश तो कल्प2 होता है। कल्प पहले भी यह हुआ था। बाप जो अपने साथ मिलने का जो रास्ता बताते हैं वह कोई नई बात नहीं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 आकर यह रास्ता बताता हूं। तुम बच्चों को पता है यह हमारी राजधानी की स्थापना हो रही है। जिन देवताओं की पूजा करते थे उनको राज्य की स्थापना फिर से हो रही है। 5000 वर्ष का चक्र है जो फिरता ही रहता है। लाखों वर्ष की बात हो तो समझा भी न सके। यह किसको भी पता नहीं है यह चक्र 5000 वर्ष का है। जो मनुष्य सुन कर घबरे हो जाते हैं। 84 लाख जन्म हो तो फिर कल्प भी लम्बा हो जाये। भक्तिमार्ग में हैं ही मिस अन्डरस्टैंडिंग। शास्त्रों में क्या बैठ लिखा है। जिसके लिए कहते हैं व्यास भगवान ने लिखा है। गीता में यह बातें नहीं हैं। यह तो बाप बैठ सम्मुख समझाते हैं। भक्ति-मार्ग में क्या2 खिलौने बना दिये हैं। खिलौनों से खेलते हैं। बुधि कुछ भी नहीं रावण क्या चीज़ है। क्यों खेलते रहते हैं। माया के मत पर चल रहे हैं। अभी तुम समझते हो यह तो नानसेन्स है। रावण को क्यों जलाते हैं कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम समझते हो। तुम्हारा नाम ही है स्वदर्शनचक्रधारी। एमआबजेक्ट यह खड़ी है। जो बाबा में ज्ञान है वह आत्मा को दिया है। जब ड्रामा का चक्र पूरा होता है तब ही बाप आकर नालेज देते हैं। बाप ही यह कर्म सिखलाते हैं। फिर वाममार्ग में जाने से ही रात शुरु होती है। फिर हम नीचे उतरते ही जाते हैं। सुख कम हो जाता है। तुम्हारी बुधि में ज्यों का त्यों सारा चक्र है जैसे बाप की बुधि में है। बाकी तुमको पावन बनने लिए ही मेहनत करनी पड़ती है। बुलाते भी इसलिए हैं कि बाबा हम पतितों को पावन बनाने आओ। फिर नालेज भी चाहिए। मनुष्य से देवता बनना है। बाप आते ही हैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाने। दूसरा कोई सिखलाये न सके। सिखलाने आवेगा ही नहीं। तब ही बाप कहते हैं वह सन्यासी आदि कितना गीता सुनाते हैं तो तुम जाकर सुनो क्या सुनाते हैं। फिर उस पर तुमको समझाया जावेगा। क्या2 फाल्तू बातें बैठ शास्त्रों में लिखी है। कृष्ण पर भी कलंक लगाया है। कितनी निन्दा की है। तब ही बाप कहते हैं यह न सुनो। यह भी ड्रामा बना हुआ है। फिर भी ऐसा ही होगा। हम किसकी ग्लानी नहीं करते हैं। परन्तु बतलाते हैं क्या2 करते हैं। इनको भक्ति मार्ग कहा जाता है। पाप चढ़ने2 बुधि एकदम भ्रष्ट हो जाती है। नाम तो पापात्माओं का भी है ना। पापात्मायें हैं तब तो बाप को बुलाते हैं। बाबा आकर हमको पावन बनाओ। अभी तुम जानते हो हम पुण्यात्मा बन रहे हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी फिर रिपीट होगी। कितनी गुह्य वन्डरफुल बातें हैं। न आत्मा को न परमात्मा को जानते हैं। आत्मा भी जो है, जैसे है, जैसा उन में पार्ट है वह बाप ही बतलाते हैं। वन्डर है ना कितनी छोटी सी आत्मा है। क्या2 उन में पार्ट भरा हुआ है। सुनने से ही रोमांच खड़ी हो जाती है। ऐसे ढेर आत्मायें देखने में आती है। बहुत अस्मर हो जाती है। साक्षात्कार होता। परन्तु उन से कोई फायदा नहीं। यहां तो योग लगाना है। मनुष्य समझते हैं बस साक्षात्कार हुआ हमने मुक्ति पा लिया। पाप भस्म हो गये। यह तो और ही मनुष्य धोखे में रह जाते हैं। समझते हैं ईश्वर का दर्शन हुआ

बस हमने ईश्वर को पा लिया। बाप हर बात समझाते रहते हैं। दिन प्रति दिन कहते हैं आज तुमको गुह्य बातें सुनाता हूं। तुम्हारी बुधि में सारा चक्र है। बस बाप को और इस चक्र को ही याद करना है। टीचर को भी याद करना है। नालेज को भी याद करना है। याद करते2 जरूर ड्रामा पलैन अनुसार कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। जैसे नंगे आये थे वैसे ही फिर नंगे हो जाना ही है। तुम दैवी संस्कार ले जाते हो। वहां कोई यह नालेज नहीं रहती है। लेकिन संस्कार ले जाते हैं। इसको ही कहा जाता है सहज याद। योग अक्षर ही नहीं है। योग अक्षर से मनुष्य मुड़ जाते हैं। वह हैं हठयोगी। राजयोग का किसको भी पता नहीं है। बाप ने ही आकर राजयोग सिखाया है। आगे सुनते थे कि गीता का भगवान ने ही राजयोग सिखाया था। परन्तु उनको भी जानते नहीं थे। 100% मीसे अन्डर स्टैंडिंग कर दिया है। जिससे मनुष्य 100% पवित्र बन जाते हैं। अनेक मतें हैं। नहीं तो वास्तव में कोई सन्यासी को गीता आदि पढ़ने का अधिकार ही नहीं है। उनका धर्म ही अलग है। गीता तो उनका शास्त्र है नहीं। गीता तुम्हारा शास्त्र है। जो तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते हो। उन्हों ने तो सन्यास कर लिया है। वह हैं ही निवृति मार्ग वाले। गीता पढ़ने का अधिकार ही नहीं। तुम हो प्रवृति मार्ग वाले। पहले तुम्हारा पवित्र प्रवृति मार्ग था। अभी अपवित्र बन गये हो। अभी फिर पवित्र बनना है। बाप तो स्वयं पवित्र है। वह आते हैं मत देने। वह लोग अपने को कितना पवित्र समझते हैं। बाप कहते हैं इस समय तो और ही तमोप्रधान बन गये हैं। पहले फिर भी सतोप्रधान थे। जैसे हम पहले सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हैं। जो जो भी आते हैं पोप, पादरी आदि पहले सतोप्रधान होते हैं। फिर एडीशन होते2 सारा झाड़ तमोप्रधान हो जाता है। अभी तो जड़-जड़ीभूत अवस्था में है। जड़-जड़ीभूत तमोप्रधान को कहा जाता है। तुम बच्चे समझते हो हम सतोप्रधान थे फिर नम्बरवार तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। नम्बरवार ही बनते जायेंगे। ड्रामा अनुसार। डिटेल तो बहुत है। जैसे बीज है। उनको पता है कैसे झाड़ निकलता है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का राज़ बाप ही बताते हैं। बागवान भी वही है। जानते हैं हमारा बाग कैसा अच्छा है। था। बाप को तो नालेज है ना। कितना फर्स्ट क्लास बगीचा था। खुदाई बगीचा था। शैतान कहा ही जाता है रावण राज्य को। बड़ा युक्ति से समझाना पड़ता है। फट से सिधा ऐसे नहीं कहना है हिन्दु कोई धर्म नहीं है। तो ही बिगड़ेंगे। बड़ा युक्ति से अक्षर निकालनी चाहिए। क्यों कि तमोप्रधान बुधि है ना। नहीं तो मारने पीटने लग पड़ते हैं। यह दुनिया ही मारा-मारी का है। जहां-तहां मारा-मारी लगी पड़ी है। अभी बाकी नेचुरल एटामिक बम रही पड़ी है वह भी तैयार कोहर बैठे हैं। सभी समझते हैं यह कोई रखने की चीज़ नहीं है। इन से विनाश होना है जरूर। अगर विनाश न हो तो सतयुग कैसे आयेगा। यह तो बिलकुल क्लीयर है। भल दिखाते हैं महाभारत लड़ाई लगी। 5 पाण्डव बचे... वह भी गल मरे। परन्तु इसकी रिजल्ट कुछ भी नहीं। द्रौपदी को हराये दिया फिर पाण्डवों के पास द्रौपदी कहां से आई। यह सब जैसे अ कहानी है। बर्थनाउ अपनी शास्त्र पढ़ते2 भारत बर्थ नाट अपनी बन गया है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। जो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। भारत को ही बहुत लूटा था अभी फिर रिटर्न में देते रहते हैं। पिछाड़ी तक देते रहेंगे। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। विनाश में तो सब खत्म हो जायेंगा। जब तुम्हारा राज्य था तो दूसरा कोई राज्य था नहीं। हिस्ट्री मस्ट रिपीट। भारत फिर हैविन बनेगा। ल0ना0 का राज्य यह स्वर्ग था ना। और कोई खण्ड का वहां नाम-निशान भी नहीं रहता है। अभी है कलियुग का अन्त। फिर इन ल0ना0 का राज्य आयेगा। हम फिर यह बनते हैं। बाप कहते हैं मैं आया हूं सहजराजयोग सिखाने। कल्प 3 अनेक बार तुम मालिक बने हो। इन्हों की सारी विश्व में राजधानी थी। बड़ी अकल मन्द थे। वहां इनको वज़ीर आदि रायें लेने की दरकार नहीं रहती। यह सब ड्रामा बना हुआ है। वैसे ही फिर होगा। कृष्ण के मंदिर को कहते हैं सुखधाम। श्रीकृष्ण है सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स वही फिर ल0ना0 बनते हैं। यह किसको भी पता नहीं है इसलिए ही कहा जाता है बिलकुल ही ईडियट

बन गये हैं। शिव बाबा आकर स्वर्ग, हेविन, शिवालय स्थापन करते हैं। वह लोग खुद भी कहते हैं क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाईज़ था। पहले तो एक ही आदी सनातन देवी-देवता धर्म था। फिर और धर्म आये हैं। बच्चों को तो वन्डर खाना चाहिए बाप हमको बादशाही कैसे देते हैं। गीता में भी है सहजराजयोग परन्तु पढ़ते ऐसे हैं जैसे बुधू। मनुष्य की बनाई हुई गीता, उनको फिर भगवान कैसे कहेंगे। ऊंच ते ऊंच भगवान तो एक ही है। उनका नाम ही है शिव। व्यास नाम थोड़े ही है। ज्ञान का सागर भी परमात्मा शिव ही है। व्यास को भक्ति का सागर कहेंगे। वह है अथार्टी। नालेज फुल। वह नालेज है भक्ति मार्ग की। यह है ज्ञान का सागर। अलाभाईटी अथार्टी भक्ति मार्ग में। यह किसको भी पता नहीं है। रावण अलाभाईटी अथार्टी है भक्ति का। बाप अलाभाईटी अथार्टी है ज्ञान का। रात-दिन का फर्क है ना। भक्ति से है दुर्गति। फिर बाप आकर फल देते हैं। कितना सहज है। परन्तु समझेंगे वही जिन्हों ने कल्प पहले समझा है। तुम ने भी कल्प पहले समझा था। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। मेहनत भी है गुप्त। तुम गुप्त सेना हो ना। किसको भी पता नहीं है। इनको अन्डर ग्राउन्ड भी कहते हैं। अननोन वारियर्स भी तुम हो। तुमको कोई हथियार पवार नहीं है। बच्चे फील करते हैं यह मंजिल ऊंची है। जो बाप कहते हैं तुमको नंगा जाना है। और कोई की भी याद न आये। शरीर से अलग हो जाना पड़ता है। कुछ भी याद न आये। हियर नो ईविल . . . . मेहनत सारी यह है। याद में रहना। जिससे जन्म-जन्मान्तर के पाप कटेंगे। अजामिल जन्म-जन्मान्तर के पापी को कहा जाता है। कब से पाप शुरू हुये हैं यह भी हिसाब है ना। सूरदास की तो एक कहानी बना दी है। इन आंखों को कोई थोड़े ही निकालना है। बाप ने तो तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र खोला है। आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनना है। सिवाय एक बाप के और कोई की याद न रहे। इसमें मेहनत है। यह तो कल्प2 तुमने स्कालरशिप ली है अभी भी लेंगे। बच्चों को खुशी होनी चाहिए भगवान हमको पढ़ाते हैं। वह हमारा गाईड है। यह गुरु लोग गाईड हैं भक्ति के लिए। उनको तो रास्ते का पता ही नहीं है। रास्ता बताने वाला एक बाप ही है। मनुष्य कितने मुंझे हुये हैं। साधू-सन्त आदि सब मुंझे हुये हैं। परन्तु अपना शास्त्रों का अहंकार कितना है। बाबा ने कहा था तुम उनको युक्ति से लिख सकते हो। जो पुजारी है वह अपने को पूज्य कैसे कहला सकते हैं। सतयुग में हैं पूज्य देवतायें, कलियुग में पुजारी मनुष्य। ज्ञान दिन-भक्ति रात। वह लोग तो ब्रह्म में लीन होने पुरुषार्थ करते हैं। समझते कुछ भी नहीं हैं। तुच्छ बुद्धि हैं। बाप कहते हैं मुझे ठिकरे-भितर में कह देते हैं। मुझे तो ड्रामा पर बड़ी हंसी आती है। खेल देखता हूं कैसे बन जाती है। मैं कल्प2 आकर मनुष्य से देवता बनाता हूं। बाकी सभी नम्बरवार अपने2 स्थान में चले जायेंगे। बाप कल्प2 ऐसी2 बातें सुनाते हैं मार्निंग न्यू। हम बेगर बन जाते हैं फिर प्रिन्स बनते हैं। यह भारत पर ही खेल है। बाकी इसमें हैं सब बायप्लाट्स। तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। तुम्हारे जैसा इंजीनियर, आफिसर कोई हो न सके। तुम वन्डर फुल हो ना। सारे भारत को ही तुम निरोगी बनाते हो। वह डाक्टर लोग भी तुम्हारे आगे क्या हैं। तुम डाक्टर लोग को भी समझा सकते हो। हम योगबल से तुमको ऐसा बना देंगे जो तुम 21 जन्म कब बिमार नहीं पड़ेंगे। ऐसे2 भाषण तुम हास्पिटल में करो। डाक्टर लोग सुन कर बहुत खुश होंगे। बोलो तुम भी पेशेन्ट हो। यह योग सिखो तो स्वयं निरोगी बन जायेंगे। तुम्हारे पर डाक्टर लोग तो कुर्बान जायेंगे। अभी तो अज्ञान तुम्हारी बहुत सर्विस रही हुई है। बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कैरेक्टर सुधारने लिए भी समझाओ। बोलो देखो देवताओं के कैसे कैरेक्टरस थे। हमको बाप यह बना रहे हैं। डाक्टर लोग तो बहुत खुश होंगे। हम ऐसी युक्ति बताते हैं जो तुम 21 जन्म लिए निरोगी बन जायेंगे। युक्ति भी बहुत सहज है। अखबार में भी तुम डाल सकते हो हम योगबल भी सिखाये सकते हैं जो कब बिमार नहीं पड़ेंगे। फिर तुमको बहुत बुलायेंगे। आस्ते2 सर्विस बुद्धि को पाती रहेगी। डाक्टर लोगों की सर्विस से तुम्हारा नाम बहुत निकलेगा। विचार करो हम ऊपर से नंगे ही आये थे। अभी फिर नंगे हो जाना है। देह सहित जो कुछ है सब से अमसक्ती निकल जाये। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।